© NCERT not to be republished

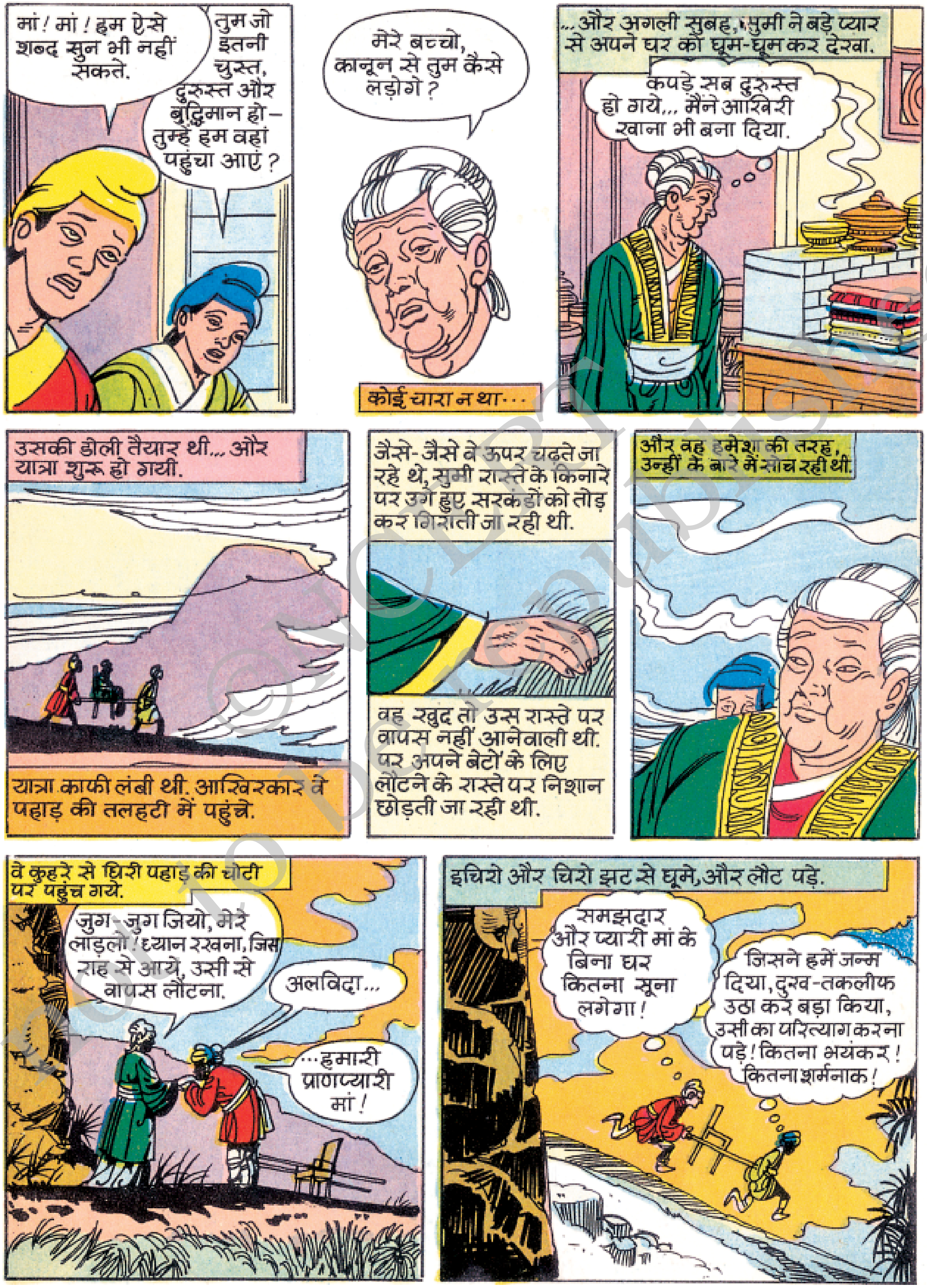
मां! मां! हम ऐसे शब्द सुन भी नहीं सकते.
तुम जो इतनी चुस्त, दुरुस्त और बुद्धिमान हो– तुम्हें हम वहां पहुंचा आएं?
मेरे बच्चो, कानून से तुम कैसे लड़ोगे?
कोई चारा न था...
...और अगली सुबह, सुमी ने बड़े प्यार से अपने घर को घूम-घूम कर देखा.
कपड़े सब दुरुस्त हो गये,... मैंने आखिरी खाना भी बना दिया.
उसकी डोली तैयार थी,... और यात्रा शुरू हो गयी.
यात्रा काफी लंबी थी. आखिरकार वे पहाड़ की तलहटी में पहुंचे.
जैसे-जैसे वे ऊपर चढ़ते जा रहे थे, सुमी रास्ते के किनारे पर उगे हुए सरकंडों को तोड़ कर गिराती जा रही थी.
वह खुद तो उस रास्ते पर वापस नहीं आनेवाली थी. पर अपने बेटों के लिए लौटने के रास्ते पर निशान छोड़ती जा रही थी.
और वह हमेशा की तरह, उन्हीं के बारे में सोच रही थी.
वे कुहरे से घिरी पहाड़ की चोटी पर पहुंच गये.
जुग-जुग जियो, मेरे लाड़लो! ध्यान रखना, जिस राह से आये, उसी से वापस लौटना.
अलविदा...
...हमारी प्राणप्यारी मां!
इचिरो और चिरो झट से घूमे, और लौट पड़े.
समझदार और प्यारी मां के बिना घर कितना सूना लगेगा!
जिसने हमें जन्म दिया, दुख-तकलीफ उठा कर बड़ा किया, उसी का परित्याग करना पड़े! कितना भयंकर! कितना शर्मनाक!

© NCERT not to be republished

एक दिन, उस राज्य के राजा ने सभी परिवारों के पुरुषों को बुलवाया.
मैं कुछ काम बताऊंगा, जो कि तुम सबको करने होंगे. जो लोग असफल रहेंगे, उनपर भारी जुर्माना होगा.
पहला काम यह है कि राख की रस्सी बना कर लाओ.
रस्सी...?
...सो भी राख की?
इचिरो और चिरो ने इस अनोखे काम के बारे में सुमी को बताया.
अरे, बड़ा आसान है! एक रस्सी लो, उसपर खूब नमक का पानी मलो. फिर उसे एक पतरे पर रखो और आग लगा दो.
रस्सी जलने पर राख रह जायेगी. पर नमक की वजह से वह बिखरेगी नहीं.
अगले दिन, दरबार में—
काम पूरा कर लाये! अति उत्तम! तुम्हारे नाम क्या हैं?
इचिरो और चिरो, महाराज.
बहुत खूब...! और याद है न, जो लोग यह काम नहीं कर पाये, उन्हें जुर्माना भरना होगा.
और बाकी सब गांववालों ने जुर्माना भर दिया.
अब दूसरा काम एक शंख लाओ, जिसके आरपार धागा पिरोया हुआ हो.

© NCERT not to be republished

अब चमड़े के गोल टुकड़े काट कर इसके दोनों ओर मढ़ दो. मगर उससे पहले...
... कुछ मधुमक्खियां अंदर छोड़ दो.
जब राजा जी ने उत्सुकता से उस अनोखे ढोल को हाथ में उठाया, तो अंदरवाली मधुमक्खियां घबरा कर उड़ीं और चमड़े से टकराने लगीं, जिससे ...
ढुप्प
ढुप्प
ढुप्प
... ढोल अपने आप बजने लगा.
चमत्कार! चमत्कार! मेरे बताये सभी काम पूरे करने के उपलक्ष्य में, ऐ लड़को, मैं तुम्हें उगते हुए सूर्य का पदक प्रदान करता हूं.
महाराज, रुकिए. हम एक अपराध स्वीकार करना चाहते हैं.
इस सम्मान के हकदार हम नहीं, बल्कि हमारी मां हैं, जिन्हें हमने अपनी झोपड़ी के पीछे छिपा रखा है.
हालांकि वे 70 वर्ष की हो चुकी हैं, पर हमने उन्हें नहीं जाने दिया है. इस तरह हमने राज्य का नियम तोड़ा है.
क्या! तुमने नियम तोड़ा है? तब तो तुम्हें वही दिया जायेगा, जिसके तुम लायक हो...

© NCERT not to be republished